अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

निदा फ़ाज़ली

काव्य संग्रह

लफ़्ज़ों के फूल (पहला प्रका शत संकलन)

मोर नाच

आँख और ख़्वाब के दर मयाँ

खोया हुआ सा कुछ (१९९६) (१९९९ में साहित्य अकादमी से पुरस्कृत)

आँखों भर आकाश

• सफ़र में धूप तो होगी

आत्मकथा

दीवारों के बीच

बाहर

निदा फ़ाज़ली (संपादक: कन्हैया लाल नंदन)

संस्मरण

मुलाक़ातें

• सफ़र में धूप तो होगी

• तमाशा मेरे आगे

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

बाइबिल के सोलोमेन जिन्हें कुरआन में सुलेमान कहा गया है, ईसा से 1025 वर्ष पूर्व एक बादशाह थे। कहा गया है, वह केवल मानव जाति के ही राजा नहीं थे, सारे छोटे-बड़े पशु-पक्षी के भी हा कम थे। वह इन सबकी भाषा भी जानते थे। एक दफा सुलेमान अपने लश्कर के साथ एक रास्ते से गुज़र रहे थे। रास्ते में कुछ चींटियों ने घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनी तो डर कर एक-दूसरे से कहा, 'आप जल्दी से अपने-अपने बिलों में चलो, फ़ौज आ रही है।' सुलेमान उनकी बातें सुनकर थोड़ी दूर पर रुक गए और चींटियों से बोले, 'घबराओ नहीं, सुलेमान को खुदा ने सबका रखवाला बनाया है। मैं कसी के लए मुसीबत नहीं हूँ, सबके लए मुहब्बत हूँ।' चोटियों ने उनके लए ईश्वर से दुआ की और सुलेमान अपनी मंजिल की ओर बढ़ गए।

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

बाइबिल के सोलोमेन जिन्हें कुरआन में सुलेमान कहा गया है, ईसा से 1025 वर्ष पूर्व एक बादशाह थे। कहा गया है, वह केवल मानव जाति के ही राजा नहीं थे, सारे छोटे-बड़े पशु-पक्षी के भी हा कम थे। वह इन सबकी भाषा भी जानते थे। एक दफा सुलेमान अपने लश्कर के साथ एक रास्ते से गुज़र रहे थे। रास्ते में कुछ चींटियों ने घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनी तो डर कर एक-दूसरे से कहा, 'आप जल्दी से अपने-अपने बिलों में चलो, फ़ौज आ रही है।' सुलेमान उनकी बातें सुनकर थोड़ी दूर पर रुक गए और चींटियों से बोले, 'घबराओ नहीं, सुलेमान को खुदा ने सबका रखवाला बनाया है। मैं कसी के लए मुसीबत नहीं हूँ, सबके लए मुहब्बत हूँ।' चोटियों ने उनके लए ईश्वर से दुआ की और सुलेमान अपनी मंजिल की ओर बढ़ गए।

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

ऐसी एक घटना का ज़िक्र संधी भाषा के महाक व शेख अयाज़ ने अपनी आत्मकथा में कया है। उन्होंने लखा है- 'एक दिन उनके पता कएँ से नहाकर लौटे। माँ ने भोजन परोसा। उन्होंने जैसे ही रोटी का कौर तोड़ा। उनकी नज़र अपनी बाजू पर पड़ी। वहाँ एक काला च्योंटा रेंग रहा था। वह भोजन छोड़कर उठ खड़े हुए। माँ ने पूछा 'क्या बात है? भोजन अच्छा नहीं लगा?' शेख अयाज़ के पता बोले, 'नहीं, यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुएँ पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।"

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

बाइबिल और दूसरे पावन ग्रंथों में नूह नाम के एक पैगंबर का ज़िक्र मलता है। उनका असली नाम लशकर था, ले कन अरब ने उनको नूह के लकब से याद कया है। वह इस लए क आप सारी उम्र रोते रहे। इसका कारण एक ज़ख्मी कुत्ता था। नूह के सामने से एक बार एक घायल कुत्ता गुज़रा। नूह ने उसे दुत्कारते हुए कहा, ‘दूर हो जा गंदे कुत्ते!' इस्लाम में कुत्तों को गंदा समझा जाता है। कुत्ते ने उनकी दुत्कार सुनकर जवाब दिया...'न मैं अपनी मर्जी से कुत्ता हूँ, न तुम अपनी पसंद से इनसान हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।"

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

मट्टी से भी मले,
खो के सभी निशान।
कसमें कतना कौन है,
कैसे हो पहचान।।

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

नूह ने जब उसकी बात सुनी और दुखी हो मुददत तक रोते रहे। 'महाभारत' में ये धष्ठिर का जो अंत तक साथ निभाता नज़र आता है, वह भी प्रतीकात्मक रूप में एक कुत्ता ही था। सब साथ छोड़ते गए तो केवल वही उनके एकांत को शांत कर

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

दुनिया कैसे वजूद में आई? पहले क्या थी? कस बिंदु से इसकी यात्रा शरू हुई? इन प्रश्नों के उत्तर वैज्ञान अपनी तरह से देता है, धा मक ग्रथ अपनी-अपनी तरह से। ससार की रचना भले ही कैसे हुई हो ले कन धरती कसी एक की नहीं है। पछी, मानव, पश, नदी, पर्वत, समदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है क इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बद ध से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा ससार एक परिवार के समान था अब टकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दर हो चुका है। पहले बड़े-बड़े दालानों-आँगनों में सब मल-जलकर रहते थे अब छोटे-छोटे डब्बे जैसे घरों में जीवन समटने लगा है। बढ़ती हुई आबादियों ने समदर को पीछे सरकाना शरू कर दिया है, पेड़ों को रास्तों से हटाना शरू कर दिया है, फैलते हुए प्रदषण ने पछियों को बस्तियों से भगाना शरू कर दिया है। बारूदों की वनाशलीलाओं ने वातावरण को सताना शरू कर दिया। अब गरमी में ज्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, ज़लजले, सैलाब, तफ़ान और नित नए रोग, मानव और प्रकति के इसी असतलन के परिणाम हैं। नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है नेचर के गस्से का एक नमना कछ साल पहले बबई (मबई) में देखने को मला था और यह नमना इतना डरावना था क बंबई निवासी डरकर अपने-अपने पजा स्थलों में अपने खुदाओं से प्रार्थना करने लगे थे।

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

कई सालों से बड़े-बड़े बिल्डर समंदर को पीछे धकेल कर उसकी जमीन को ह थया रहे थे। बेचारा समंदर लगातार समटता जा रहा था। पहले उसने अपनी फैली हुई टाँगें समेटी, थोड़ा समटकर बैठ गया। फर जगह कम पड़ी तो ऊकड़ूँ बैठ गया। फर खड़ा हो गया... जब खड़े रहने की जगह कम पड़ी तो उसे गुस्सा आ गया। जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही कम गुस्सा आता है। परंतु आता है तो रोकना मुश्किल हो जाता है, और यही हुआ, उसने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाजों को उठाकर बच्चों की गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक वर्ली के समुंदर के कनारे पर आकर गरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने औंधे मुँह और तीसरा गेट वे ऑफ इं डया पर टूट-फूटकर सैलानियों का नजारा बना बावजूद को शश, वे फर से चलने- फरने के काबिल नहीं हो सके।

मेरी माँ कहती थी, सूरज ढले आँगन के पेड़ों से पत्ते मत तोड़ो, पेड़ रोएँगे। दीया-बत्ती के वक्त फूलों को मत तोड़ो, फूल बद्दुआ देते हैं।... दरिया पर जाओ तो उसे सलाम कया करो, वह खुश होता है। कबूतरों को मत सताया करो, वे हज़रत मुहम्मद को अज़ीज़ हैं। उन्होंने उन्हें अपनी मजार के नीले गुंबद पर घोंसले बनाने की इज़ाज़त दे रखी है। मुर्गे को परेशान नहीं कया करो. वह मुल्ला जी से पहले मोहल्ले में अज़्ज़ान देकर सबको सबेरे जगाता है

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

सब की पूजा एक-सी , अलग-अलग है रीत।
ममस्जिद जाए मौलवी , कोयल गाए गीत।।

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

ग्वा लयर में हमारा एक मकान था, उस मकान के दालान में दो रोशनदान थे। उसमें कबूतर के एक जोड़े ने घोंसला बना लया था। एक बार बिल्ली ने उचककर दो में से एक अंडा तोड़ दिया। मेरी माँ ने देखा तो उसे दुख हुआ। उसने स्टूल पर चढ़कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। लेकन इस कोशिश में दूसरा अंडा उसी के हाथ से गरकर टूट गया। कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। उनकी आँखों में दुख देखकर मेरी माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस गुनाह को ख़ुदा से मुआफ़ कराने के लए उसने पूरे दिन रोज़ा रखा। दिन-भर कुछ खाया - पया नहीं। सर्फ़ रोती ही और बार-बार नमाज पढ़-पढ़कर खुदा से इस गलती को मुआफ़ करने की दुआ माँगती रही।

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

ग्वा लयर से बंबई की दूरी ने संसार को काफ़ी कुछ बदल दिया है। वर्सोवा में जहाँ आज मेरा घर है, पहले यहाँ दूर तक जंगल था। पेड़ थे, परिंदे थे और दूसरे जानवर थे। अब यहाँ समुंदर के कनारे लंबी-चौड़ी बस्ती बन गई है। इस बस्ती ने न जाने कतने परिंदों चरिंदों से उनका घर छीन लिया है। इनमें से कुछ शहर छोड़कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा डाल लिया है। इनमें से दो कबूतरों ने मेरे फ्लैट के एक मचान में घोंसला बना लया है। बच्चे अभी छोटे हैं। उनके खलाने- पलाने की जिम्मेदारी अभी बड़े कबूतरों की है। ये दिन में कई-कई बार आते-जाते हैं। और क्यों न आएँ-जाएँ आ खर उनका भी घर है। ले कन उनके आने-जाने से हमें परेशानी भी होती है। वे कभी कसी चीज़ को गराकर तोड़ देते हैं। कभी मेरी लाइब्रेरी में घुसकर कबीर या मर्ज़ा गा लब को सताने लगते हैं। इस रोज-रोज की परेशानी से तंग आकर मेरी पत्नी ने उस जगह जहाँ उनका आ शयाना था, एक जाली लगा दी है. उनके बच्चों को दूसरी जगह कर दिया है। उनके आने की खड़की को भी बंद कया जाने लगा है। खड़की के बाहर अब दोनों कबूतर रात भर खामोश और उदास बैठे रहते हैं। मगर अब न सोलोमेन है जो उनकी ज़ुबान को समझकर उनका दुख बाँटे, न मेरी माँ है, जो इनके दुखों में सारी रात नमाज़ों में काटे-

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

नदिया सींचे खेत को, तोता कुतरे आम।
सूरज ठेकेदार-सा, सबको बाँटे काम।।